में जितने प्रतापी राजे हुए उन में से "रामीसिस" नाम एक राजा बहुत प्रसिद्ध था। कहते हैं कि उस ने सारे तुर्किस्तान को अपने क़ब्ज़े में कर के कास्पियन झील के किनारे तक अपना राज्य बढ़ाया था, कोई कहते हैं कि यह वाही "सिसष्ट्रिस" या जिस का वर्णन पहिले हो चुका है। इसके बाद मिसर में बहुत से राजा हुए उन सबों की राजधानी "थीब्स" नगर रहा। और उनके समय में मिसरी लोगों ने कारीगरी में होशियार हो कर बड़े बड़े पिरामिड बनाये और बड़े बड़े काम किये थे।

इस तरह चैन से कुछ दिन काट कर मिसर वाले फिर ऐयाश और कमज़ोर हो गये। इसी लिये "इथिओपिया" के राजा "साबाकी" ने उन लोगों को सहज ही जीत कर अपने अधीन कर लिया था। कहते हैं कि वह ५० बरस अच्छी तरह राज करने के बाद अपने देश को लौट गया। उस के कुछ दिन बाद "सीथस" नाम किसी पुरोहित ने राजा हो कर योद्धा जाति के लोगों पर बहुत अत्याचार किया। लेकिन शहर के रहने वाले बनियें और कारीगर लोग इसकी तरफ़ थे। जब ७१२ बरस "ईसा" के जन्म के पहिले आसिरिया के राजा "सेन्नाकेरिब" ने "मिसर" पर चढ़ाई की तब योद्धा जाति के लोगों ने राजा की सहायता नहीं की। और सिर्फ़ साधारण लोग हथियार

बांध कर लड़ने के लिये आगे हुए थे। इस समय के इतिहास का कुछ ठिकाना नहीं मिलता केवल यह मालूम होता है कि "सावाको" राजा सारे मिसर को एक वार्गी नहीं छोड़ गया था, मिसर का दक्खिन हिस्सा उसके बंश के राजा लोगों के क़बज़े में रह गया था केवल उत्तर भाग "सौथस" नाम पुरोहित के हाथ लगा था।

"सौथस" के बाद मिसर के राज की रीत कुछ और भी बदली, उस समय में बारह राजे मिसर में राज्य करते थे। पहिले तो इन बारहों के आपस में बड़े हेल मेल थे, पीछे उन में से "सामिटिक" नाम एक राजा ने यूनानी सेना की मदद से अपने बिरोधी ग्यारह राजाओं को हरा दिया और आप सारे मिसर का राजा हुआ। वह पुराने मिसर वालों की तरह दूसरे देश के लोगों से डाह नहीं रखता था बरन यह बरन कोशिश करता था कि जिससे गुणवान यूनानी लोग यूनान को छोड़ उसके राज्य में आ बसें। उसने "साइरूणि" नामी जगह में ग्रीक लोगों की एक नईबस्ती बसाई थी। वह बिदेशी गुणी लोगों को इतना मानता था तो भी अपने धर्म पर पूरी भक्ति रखता था। उसका बेटा "नेको" अपने बाप की तरह ग्रीस और फ़िनेशिया के नाविकों की सहायता से आफ्रिका के चारों तरफ़ फिरा था। उसने एक नहर खोद कर नील नदी को लाल समुद्र

के साथ मिलाया था, इस नहर का चिन्ह आज तक कहीं कहीं देख पड़ता है। ६०८ बरस ईसा के जन्म के पहिले इस ने सीरिया देश पर चढ़ाई की और यहूदियों के राजा को जीता, और बेविलन राज्य को जीतने के लिये धीरे धीरे यत्न करने लगा। लेकिन बेविलन के राजा "नेबूकडनेसर" ने "कारकेमिस" नाम जगह की लड़ाई में उसे हरा दिया। वह प्रसिद्ध लड़ाई ६०४ बर्ष ईसाके जन्मके पहिले हुई।

"नेको" के मरने पर उसका बेटा "सामिस" और "सामिस" के मरने के बाद उसका बेटा "एपरिस" मिसर का राजा हुआ। एपरिसने फ़िनिशियन वालों के साथ लड़कर उनको बहुत सी जगहें छीन लीं। लेकिन वे सब जगहें उस के हाथ में बहुत दिनों तक न रहीं। बेबिलन के प्रतापी राजाओं ने उन सब जगहों को लेलिया, और "साइरूनी" नई बस्ती के रहने वाले यूनानियों ने भी 'एपरिस' से बिगड़ कर उसकी सेना को संहार किया। मिसर की प्रजा भी अपने देश की वह दुर्दशा देख बहुत व्याकुल हुई और उस से बिगड़ गई। तब उस ने अपने प्रियपात्र 'आमोसिस' को यह कहला भेजा कि तुम जाकर सब प्रजा को शान्त करो, प्रजा के लोगों ने "आमोसिस" ही को अपना राजा बनाया।

"आमोसिस" एक नीच कुल का था, और पहिले हर तरह के दोषों से भरा हुआ था। लेकिन वह राजा

होने पर अच्छी तरह से राज्य करने लगा। यूनानियों से उसका बड़ा हेलमेल था। "सेमस" टापूका राजा "पालिक्रेटिस" उसका परम मित्र था। "आमोसिस" के मरने के बाद उसका बेटा "सामेनिटस" राजा हुआ, लेकिन वहुत दिनों तक राज नहीं कर ने पाया। फ़ारस के राजा "काम्बाईसिस" ने ६ महीने के भीतर ही मिसर पर चढ़ाई की, और कुत्ता, बिल्ली आदि जन्तुओं को जिनको कि मिसरी लोग पूजते थे, अपनी सेना के आगे रख कर सहज ही में "पेलसियम" नगर को ले लिया। थोड़े ही दिनों में सारा मिसर देश उस के हाथ आगया। यह बात ५६२ पांचसौबासठ बरस पहिले ईसा के जन्म के हुई।

पांचवां अध्याय।

मिसरी लोगों की पराधीनता का हाल।

फ़ारस का राजा "काम्बईसिस" नें मिसर को जीत कर वहां के प्रजा की बड़ी दुर्दशा की, विशेष करके

वह मिसर वालों के देवताओं की बड़ी बुरी गति करता था। उसने "मेम्फिस" नगर को जीत कर वहां के प्रसिद्ध देवता "एपिस" नाम गौ को टुकड़े टुकड़े करके अपनी सेना को खाने को दिया। फारसियों के धर्म्म उपद्रव करने के कारण मिसरी उन से जी से चिढ़ गये, यहां तक कि कोई भी अवसर मिलने पर फसाद करने से बाज़ न आये। जब पहिला "दरायुस" फ़ारस का राजा था उस समय मिसर वालों ने बड़ा बलवा मचाया। तीन बरस के बाद फ़ारस के राजा "जरकसिस" ने उस बलवे को दबाया। उस के बाद तीस बरस के दर्मियान एक और बलवा हुआ, उस में पांच बरस तक लड़ाई रही थी। उस के बाद वह दबाया गया। मिसर वालों ने फिर तीसरी बार बलवा करके कुछ दिन के लिये स्वाधीन हो गए। उस समय में "आंमिरटियस" नाम एक आदमी उन लोगों का राजा हुआ। उसके मरने के बाद फ़ारसियों ने फिर मिसर को फ़तह किया, फ़िर "नेक्टोनिबस" नामी मिसर का राजा सरकशी करने लगा। लेकिन फ़ारसियों ने बड़ी कोशिश से उसको दबाया, और पहिले जैसे मिसर के राजाओं के साथ अच्छा सलूक करते थे और राज का बन्दोबस्त उनके हाथ में सौंपते थे वैसा इस बार न किया। इस तरह मिसर के राजाओं का बंश उच्छिन्न हो गया, उस समय से ले सिकंदर के आने तक मिसर में और कोई बलवा न हुआ।

सिकन्दर के मरने बाद उसके सेनापतियों ने उसका बड़ा राज्य आपस में बांट लिया। मिसर, "टलोमि-सोटर" नाम एक सेनापति के हिस्से में पड़ा। वह दूसरे सेनापतियों की तरह लड़ाई में अपने धन जन की हानि नहीं करता था। केवल अपने राज्य की रक्षा और बढ़ती के लिये यत्न किया करता था। उसने "अलिकज़ंन्ड्रिया" नगर को अपनी राजधानी बना कर उस की एक जगह में रसगृह और पुस्तकालय स्थापित किया था। और बहुत बड़े बड़े पण्डितों और कवियों को सन्मान के साथ रखता था। उसके बेटे "टलोमीफ़िलाडल्फ़स" और पोते "टलोमी यूजेटीस" ने भी राज की बढ़न्ती और लोगों को विद्या की तरक्की के लिये बहुत उपाय किया। ये लोग लड़ाई में भी कम न थे। सीरिया, साइरनी, फ़िनेशिया आदि सब देश इनके इलाके में थे। और "यूजेटिस" की सेना एक समय में "वाक्ट्रिया" तक आई थी। "टलोमी" वंश के ये तीन राजे बड़े लायक थे; और पुराने मिसरी लोग अगर बिदेशियों से डाहरखने वाले और बदचलन न होते तो यूनान वालों से हर तरह की विद्या सीख कर फिर बड़े सभ्य और बली हो जाते। लेकिन उस समय मिसर वालों में यह एक बड़ी बुराई थी कि वे लोग अपने पहिले समय की बड़ाई को याद कर ऐसा घमंड करते थे कि यूनानियों से कोई नई चीज़ सीखने

में अपनी अप्रतिष्ठा समझते थे। जब प्रजाही विद्या सीखना न चाहे तो केवल राजा क्या कर सक्ता है। यूनानियों ने भी जब देखा कि मिस्र वालों की तरक्की के लिये यत्न करना व्यर्थ है तो वे पहिले जिस अच्छे काम केलिये मुस्तैद हुए थे उसको छोड़ सुख चैन में अपने दिन काटने के लिये हर तरह के उपाय करने लगे। "टलोमीं के वंश में इन तीन राजाओं के सिवा जितने राजा हुए उन में बहुतेरे नालायक बदचलन और ऐयाश थे। चौथे "टलोमी" का नाम "फिल्पेटर" था दुनियां में ऐसा कोई बुराकाम नहीं है कि जिस को इस ने न किया था। उस के बेटे "एफ़िनिस" ने लड़कपन ही में राज गद्दी पायी थी! सीरिया और "मेसोडोनिया" के राजाओं ने मिल कर उसका राज्य छीन लेने का इरादा किया, इस लिये उसके वज़ीरों ने 'रोमियों' से मदद मांगी, रोम वालों ने भी उसके राज लेने की इच्छा की और सीरिया की राज कुमारी "क्लियोपाटरा" के साथ उसकी ब्याह कर उसके लोगों के साथ मेल किया। उसके बाद उसका बेटा "फ़िलोमिटर" राजा हुआ। जितने दिन तक उसकी मा "क्लियोपाटरा" जीती रही उतने दिन तक राज का बन्दोबस्त एक तौर पर चलता रहा। लेकिन "क्लियोपाटरा" के मरने के बाद हर तरह की बुराइयां होने लगीं। रोमी लोग धीरे

धीरे प्रबल हुए और "टलोमी" लोग मूर्ख और बद चलन होते गये। टलोमी बंश की आखरी रानी "क्लियोपाटरा" ने अपने को आप मारडाला। तब राज्य ३० बरस ईसा के जन्म के पहिले रोमी लोगों के हाथ लगा।

मिसर देश के रोमियों के राज्य में मिल जाने के बाद के समय का कोई खास उस देश का इतिहास नहीं है। रोमियों ने वहां का बन्दोवस्त इस तरह से किया कि मिसरी लोग फिर एक बार भी सिर न उठा सके। जब रोम में इसाई धर्म्म फैला तो मिसरवाले भी उसी समय इसाई हुए। और जब रोम वर्बाद हो गया तब मिसरवाले अरब वालों के तावे हो गये।

———

चतुर्थ प्रकरण ।

यहूदी लोगों का हाल ।

पहिला अध्याय ।

पालेष्टीन देश का बर्णन ।

पुराने इतिहासों में यहूदी जाति के लोग बहुत प्रसिद्ध थे। उन का इतिहास बहुत प्राचीन है, पर तौभी उस में झूठी कहांनिया नहीं भरी हैं। ये लोग आज तक हैं और अब छितर बितर हो दुनियां के सब देशों में बसने पर भी इन के धर्म्म, भाषा, रीति, व्यबहार सब जैसे पहिले थे वैसे ही अब भी हैं, इस लिये इन लोगों का इतिहास पढ़ने से बड़ा ही आनन्द और अचरज होता है।

भूमध्य सागर के उत्तर "पालेष्टीन" नाम एक छोटा सा देश है, उसकी लंबाई उत्तर से दक्षिण तक १०० कोश और चौड़ाई पूरब से पश्चिम तक २५ कोश है। यह पहाड़ी देश है। पहाड़ों के सब तराइयों में छोटी बड़ी बहुत नदियां बहती हैं इस कारण वे बहुत उपजाऊ होती हैं। पर यह देश पहिले जैसा उपजाऊ था अब वैसा

नहीं है, इसका कारण यह मालूम होता है कि खेती का अच्छा बन्दोबस्त शायद वहां अब नहीं है।

इसी देश में क्रिस्तानी धर्म्म के चलाने वाले ईशूखीष्ट ने जन्म लिया था, इस लिये क्रिस्तान लोग यहां की बहुत सी जगहों को पवित्र तीर्थ समझते हैं। मुसल्मान लोग भी इस देश की बहुत सी जगहों को तीर्थ मानतेहैं। बिशेष करके "रोमनकाथलिक" क्रिस्तान लोग "पालेष्टीन" की प्रधान "जर्डान" नद्दी के जल को ऐसा पवित्र समझते हैं कि उनमें से हजारों हरसाल "यूरोप" के अनेक प्रदेशों से आकर वहां स्नान और दान करते हैं। इस देश का प्रधान नगर "यरुसलेम" भी बहुत प्रसिद्ध तीर्थस्थान गिना जाता है। बहुत से लोग वहां के मठ और समाधि के दर्शन के लिये अनेक देशों से आते हैं।

तीर्थस्थानों में अक्सर बड़ी बड़ी आश्चर्य्य की चीज़ें बनाकर रक्खी रहती हैं। "पालेष्टीन" में भी ऐसी बातें हैं। वहां एक जगह है उसकी मिट्टी के साथ कुछ सेत खरी मिट्टी मिली है, इस कारण वहां की मिट्टी सफेद निकलती है। इस का कारण "रोमनकाथलिक" के पुरोहित लोग यह बताते हैं कि एक दिन "ईशूखृष्ट" की मा "मरियम" कुमारी, "ईशू" को दूध पिलाती थी, उस समय कुछ दूध उस जगह पर गिर पड़ा इसी से वहां की मिट्टी अब तक सफेद निकलती है, और वे लोग यह भी कहते हैं कि उस मिट्टीमें ऐसा गुण है कि कम दूध वाली

स्त्री जो उस को पीवे तो उसको बहुत दूध होने लगे। और वहां एक बड़ा पहाड़ है, पुरोहित लोग कहते हैं कि उसके पत्थर के टुकड़े अंगूर, पिस्ते, अनार आदि मज़ेदार फलों के से आप से आप देख पड़ते हैं, यह कह कर पुरोहित लोग उन पत्थरों के टुकड़ों को यात्रियों के हाथ बेचते हैं और रुपये पैदा करते हैं। यथार्थ में सारा "पालेष्टीन" देश तीर्थस्थान है। वहां जगह जगह एक से एक आश्चर्य चीज़ें देखने और चमत्कार बातें सुनने में आती हैं।

इस देश में जितनी बातें स्वाभाविक आश्चर्य की देख पड़ती हैं उन में "मरु सागर" का वर्णन सब की पहिले करना चाहिये। इस समुद्र का जल तेलहा है, इस में मछली आदि कोई जलजन्तु नहीं रह सके हैं, और इसके चारों तरफ़ निर्जन मरुभूमि है उस में एक तृण भी नहीं उपजता। बड़े आश्चर्य की बात यह है कि "मरुसागर" में "जर्डीन" नदी का पानी गिरता है और यद्यपि उस सागर का योग महासमुद्र के साथ ज़ाहिर में कहीं नहीं देख पड़ता है तो भी वह सागर कभी पानी से भर नहीं उठता है। इससे कोई कोई भूगोल जानने वाले यह अनुमान करते हैं कि यह "मरुसागर" हो न हो पृथ्वी के भीतर २ महा समुद्र से कहीं अवश्य मिला है।

दूसरा अध्याय।

यहूदियों का "पालेष्टीन" जीतना।

कहते हैं कि "नोया" के मझले बेटे "सेम" के वंश में "इब्राहिम" नाम एक महात्मा ने जन्म लिया। उन की जन्मभूमि "कालिडया" थी। "कालिडया" के लोग उस समय मूर्ति पूजते थे और उन लोगों को सत्य असत्य का बिचार न था। "इब्राहिम" उन लोगों के मत का खंडन करके ब्रह्मवाद और सत्य धर्म्म की शिक्षा देने का यतन करने लगे। इस लिये उनसे लोग बिगड़ गये। तब महात्मा "इब्राहिम" अपनी जन्मभूमि छोड़ पश्चिम ओर जाते जाते "पालेष्टीन" देश में जा पहुंचे। उन के मरने के बाद "आइज़ाक" नाम उन का बेटा "पालेष्टीन" में रहने लगा। पर "आइज़ाक" का बेटा "याकब" एक समय अकाल पड़ने के कारण "पालेष्टीन" को छोड़ कर "मिसर" देश में जा बसा। "याकब" के १२ लड़के हुए, उन में से सब से छोटा लड़का "यूसफ़" "मिसर" के राजा का मंत्री हुआ, और अपनी बड़ी बुद्धि के द्वारा राज्य का बड़ा उपकार किया और अपने भाइयों को भी बहुत सी भलाइयां कर गया।

याकब के बारह लड़कों से "यहूदी" लोगों के १२

गाल हुए। वे लोग बहुत दिनों तक सुख चैन से "मिसर" में रहे। बाद उसके "मिसरी" लोग उनकी बड़ाई देख कर डाह से उनको हर तरह दिक़ करने लगे। उस समय "मूसा" नाम एक महात्मा यहूदियों में प्रगट हुए, और उन्हों ने अपने जात भाइयों को मिसरी लोगों के हाथ से बचाने का उपाय किया। वे सब यहूदियों को साथ लेकर "काइरी" नाम जगह के निकट गये और उसकी दक्षिण पूरब ओर "गोशन" नाम प्रदेश में जाकर "स्वेज़" की खाड़ी पार हुए, और पूरब की किसी एक जगह में जा पहुंचे। वह जगह पहाड़ी और भयावन मरुभूमि थी। "यहूदी" लोग बहुत दिनों तक उस भयानक जगह में फिरते रहे। निदान जब उन में से बहुतेरे समय पाकर मर गये और उनके लड़के जवान और साहसी हुए तब "मूसा" ने उनको उत्तर तरफ़ ले जाकर "पालेष्टीन" देश दिखलाया और उस को जीतने की आज्ञा दी। और आप शरीर त्याग कर पर-लोक भये। "मूसा" के मरने के बाद "जशूआ" नाम एक योद्धा लोगों का सर्दार बना, उसके समय यहूदी लोगों ने "पालेष्टीन" के बहुत हिस्से जीत लिये। उन लोगों ने वहां के रहने वाले "कानान" के वंश वालों में से बाज़ को मार डाला बाज़ को निकाल दिया और बाज़ को दास बना लिया और धीरे धीरे सारे देश को अपने आधीन कर लिया।

यहूदी लोगों ने सारे देश को अपने अधिकार में लाकर जैसे आप १२ हिस्सों में बटे थे वैसे ही सारे देश को भी १२ हिस्सों में बांटा। उन में से "लेभी" के वंश में जो पुरोहित लोग उत्पन्न हुए थे उन लोगों ने अपने लिये भूमि का कोई खास हिस्सा न लिया। पर यह बात ठहरवा लिया कि सारे देश में जितना ग़ल्ला उपजें उसका दसवां हिस्सा उन लोगों को मिला करे। और "यूसफ" की दो लड़कों से जो दो गोत्र उत्पन्न हुए थे उन लोगों को भूमि का अलग अलग हिस्सा मिला था। लेकिन ये बार हिस्से बराबर नहीं थे, जिस गोत्र में जितने ज्यादा वा कम आदमी थे उस गोत्र को उतनी ही अधिक वा कम भूमि मिली थी। १४५० बरस "ईसा" के जन्म के पहिले "यहूदी" लोग "पालेष्टीन" में रहते थे और तब उनकी मर्दुम शुमारी ६,०१,७३० थी।

तीसरा अध्याय।

"प्रबल यहूदियों का धीरे धीरे निर्बल होना"।

यहूदी लोगों ने "पालेष्टीन" जीतने के बाद पहिले एक तरह का कुलतंत्र राज जारी किया था। उन

लोगों के बारह गोत्रों में बारह आदमी बिचार करने वाले मुकर्रर हुए थे। वे लोग अपने अपने गोत्र के सब राज-काज किया करते थे, लड़ाई के समय वे लोग सेनापति बन कर युद्ध करने जाते थे। और जिस समय अमन-चैन रहता था उस समय अपने गोत्रों के लोगों के दीन, दुखिया के सब कामों का इन्तज़ाम किया करते थे, लेकिन जब उन सब लोगों पर कोई एक आम आफ़त आती थी तो उन बारह गोत्रों के लोग आपस में मिल कर एक ही सेनापति बनाते थे और वह सब लोगों के ज़रूरी कामों का बन्दोबस्त करता था। विचारपति लोग अपने अपने गोत्रों की इच्छा के अनुसार सब काम नहीं कर सक्ते थे। पर 'लेभी' बंश के पुरोहित लोगों के मतके अनुसार वे लोग सब काम करते थे। 'यहूदी' लोगों का यह बिश्वास था कि पुरोहित लोग ईश्वर से उपदेश पाकर बिचार करने वालों को सलाह देते थे, उन सब लोगों का ऐसा बिश्वास के कारन 'पालेष्टीन' के पुरोहित लोगों की शक्ति बहुत बढ़ गई थी। इस लिये यहूदी लोगों के उस समय के राज को पुरोहितों का राज भी कह सकते हैं।

इस तरह का राज तीन सौ ३०० बरस तक चला। उस समय में यहूदी लोगों का बड़ा प्रताप बढ़ा था उन लोगों ने अपने आस पास के दुश्मनों को जीता और दिन दिन धन और सभ्यता में बढ़ते गये। कुछ दिन बाद उन लोगों के राज का तौर बदल गया। 'सल' नाम एक

आदमी सारे 'पालेष्टीन का राजा हुआ। उसके बाद 'दाऊद' ने राजा होकर चारों तरफ़ के दुश्मनों को जीत कर यहूदियों का नाम बढ़ाया। 'दाऊद' के लड़के 'सालिमन' राजा के समय में 'पालेष्टीन' को बहुत बढ़ती हुई। यहूदी लोग जैसे खेती और लड़ाई में निपुण थे वैसे ही तिज़ारत में भी अपना प्रभाव दिखलाने लगे और 'फ़िनेशिया' लोगों की मदद से कारीगरी में भी बढ़ गये।

"सालिमन" राजा के मरने के बाद राज्य दो हिस्सों में बट गया, उन में जो हिस्सा उत्तर तरफ़ था उसका नाम 'इसाराईल' और जो हिस्सा दक्खिन ओर था उसका नाम 'यहूदा' पड़ा। इन दो हिस्सों के राजे आपस में लड़ने लगे। और दूसरी जाती के लोग भी उन पर चढ़ाई करने लगे, इस कारण ये दोनों राजे कमज़ोर हो गये, निदान ७२२ सात सौ बाईस बरस ईसा के जन्म के पहिले 'निनिवा' नाम प्रसिद्ध नगर के राजा ने 'इसराईल' राजपर चढ़ाई की और वहां के रहने वालों को रणबन्दी यानि लड़ाईका कैदी कर लेगया। उन अभागे कैदियों का हाल अन्त में क्या हुआ आज तक मालूम नहीं हुआ।

'यहूदा' राज्य इसके बाद भी कुछ दिन तक स्वाधीन रहा, बाद इस के ५८८ बरस ईसाके जन्म के पहिले 'वैबिलन' का राजा 'नेबुकड़ नेसर' ने 'यहूदी' राज्य पर

चढ़ाई की, 'यरुसलेम' राजधानी को बर्बाद किया और हज़ारों को क़ैद कर ले गया। इस बात के ५० बरस बाद अर्थात् ५३८ बरस ईसाके जन्म के पहिले जब फ़ारस" के राजा 'साइरस' ने 'वैबिलन' को जीता तब उसने उन यहूदियों को क़ैद से छुड़ाया। इन लोगों ने उसके हुक्म से अपने देश को लौट कर फिर 'यरुसलेम' नगर को बसाया। 'पालेष्टीन' देश उस समय फ़ारस के राजाओं के अधीन रहा, इसके बाद 'सिकन्दर' ने जब फ़ारस' को जीता तब 'पालेष्टीन' उसके हाथ में आया। जब यूनानियों के दिन बिगड़ गये, और रोमी लोग प्रबल हुए तब 'पालेष्टीन' देश 'रोम' के राजा के हाथ में आया। जिस समय में 'पालेष्टीन' रोमी लोगों के हाथ लगा उसी समय 'ईसा' का जन्म हुआ। उन के मारे जाने के उद्योग करने वालों में यहूदी ही लोग मुख्य थे। इसके बाद यहूदियों ने फिर स्वाधीन होना चाहा, रोमी लोगों ने इस कारण बहुत रंज हो कर उन लोगों को अच्छी तरह से दबाया और उनको पालेष्टीन से निकाल दिया। इस कारण यहूदी लोग पृथ्वी के बहुत से देशों में फैल गये। उस समय से यहूदी लोग अपने देश में फिर आपस में न मिल सके। लेकिन यहूदी लोगों को यह भरोसा है कि ईश्वर आप प्रगट हो कर हम लोगों को इकट्ठा कर, फिर हम को हमारा देश रहने को देगा।

———

यहूदी लोगों का धर्म और जात।

चौथा अध्याय।

यहूदी लोगों के राज के हाल का बयान पहिले ही लिखा गया है, अब उन की धर्म्म-प्रणाली के बिषय में कुछ लिखना अवश्य है। यहूदी लोगों का असल धर्म्म ब्रह्मवाद था, ये लोग एक ईश्वर ही की उपासना करते थे, और मूर्ति बनाकर पूजा करना बहुत ही बुरा समझते थे, 'यरुस-लेम' नगर में 'सलेमान' के बनाये हुए प्रसिद्ध देव मंदिर में एक बेदी बनी थी उसपर दो तरफ दो देवतों की मूर्तियां रक्खी थीं, और उन दोनों के बीच जो खाली जगह थी वहां ईश्वर आप विराजमान होते थे, पुरोहित लोग जब किसी बात को पूछते थे तो ईश्वर उसी जगह से उसका उत्तर देते थे, और बहुत तरह की चमत्कार बातें उस जगह होती थीं।

'यहूदीलोग' ईश्वर को ज्योहोबा कहते हैं। जो लोग ज्यो होबा की उपासना छोड़ दूसरे देवता की पूजा करते थे वे म्लेच्छ समझे जाते थे। होम करना और बलिदान देना उनकी उपासना के प्रधान अंग थे, लेकिन सब पशुओं का मांस शुद्ध नहीं समझा जाता था। यहूदी लोग 'शूकर' के मांस को बहुत अपवित्र समझते थे, और लड़कपन में सुन्नत करना

उन लोगों का प्रधान संस्कार था। यहूदी लोग अपने आस पास के लोगों को देखा देखी कभी कभी देव देवियों की भी उपासना करते थे, लेकिन उनके धर्म की किताबों में यह साफ़ लिखा है कि जब जब उन लोगों ने ऐसा किया, तब तब उन लोगों को शत्रुओं से नीचा देखना पड़ा और बहुत तरह की आफतें झेलनी पड़ीं।

'यहूदी' लोग दूसरी जातियों के धर्म को बुरा समझते थे इस लिये किसी देश के लोगों के साथ उनका कभी मेल न हुआ। वे लोग जैसे दूसरे धर्मावलम्बी लोगों से डाह रखते थे, वैसे ही उन लोगों को भी दूसरी जाति के लोग बहुत बुरा समझते थे, और इस लिये उस समय से आजतक पृथ्वी में सब लोग यहूदियों को ख़राब समझते हैं।

यहूदियों के धर्मपुस्तक का नाम 'बाइबल' है, यह संपूर्ण पुस्तक एक समय किसी एक आदमी से नहीं बनाई गई थी। इसके किसी किसी स्थानों में यहूदी लोगों का इतिहास लिखा है और किसी किसी हिस्सों में उनकी रीत और रस्म के कायदे भी लिखे हैं। और इसके किसी हिस्से में कबिता भरी है, इस किताब का कौन हिस्सा कब और किससे बनाया गया यह मालूम नहीं है, इतना कहा जा सकता है कि कोई कोई हिस्से ईसा के जन्म के क़रीब तीन हज़ार बरस पहिले और कोई कोई हिस्से सिर्फ़ ३०० बरस ईसा के जन्म के पहिले

बनाये गये थे। इसाई लोगों की नई इंजील और मुसल्मानों के कुरान की जड़ यही किताब हैं। मुसल्मान लोगों की बहुत सी रीत व्यवहार यहूदी बाइबिल के मुताबिक हैं। इसाइयों ने उस में के बहुत से आचार के नियमों को छोड़ दिया है। अब यह देखना चाहिये कि यहूदियों से दुनिया में लोगों की क्या क्या भलाइयां हुईं। उन लोगों ने 'यूरोप' आदि पश्चिम देशों में केवल एक ईश्वर को मानने का धर्म चलाया, उन सब देशों के प्राचीन पण्डित लोग 'ब्रह्मवाद' धर्म मानते थे लेकिन साधारण लोगों में वह धर्म जारी न था अर्थात् पहिले वह धर्म जाति भर का न था, सिर्फ यहूदियों ने उस धर्म को सब लोगों में चलाया।

पांचवा प्रकरण।

'फ़िनिशिया' देश और वहां के लोगों का हाल।

प्रथम अध्याय।

भूमध्य सागर के पूरब किनारे पर 'फ़िनिशिया' देश था। आज कल वह जगह तुरक राज्य के इलाके है। वह देश बहुत छोटा था। दक्षिण तरफ़ 'टायर' नगर से लेकर उत्तर तरफ़ आराउस नगर तक उसकी लंबाई साठ ६० कोस थी, और पश्चिम तरफ़ भूमध्यसागर से लेकर पूरब तरफ़ लिबनस पहाड़ तक उसकी चौड़ाई क़रीब दस कोस के थी। उस देश की आबहवा बहुत अच्छी और ज़मीन बहुत उपजाऊ थी। कै एक छोटी छोटी नदियां लिबानस पहाड़ से निकल कर उस देश में बहती हैं और उनका पानी कभी कभी इतना बढ़ जाता कि दोनों किनारों के ऊपर तक चढ़ आता है उन में से 'आगेनिस' नदी सबसे प्रसिद्ध है।

'फ़िनिशिया' के नज़दीक समुद्र में एक तरह की मछली होती थी, पुराने 'फ़िनिशिया' वाले उसी मछली से लाल रंग तैयार करते थे। मालूम होता है कि अब उस तरह की मछली पैदा नहीं होती या कोई उसके उस काम को नहीं जानता। पुराने 'फ़िनिशिया'

वालों की तरह आज कल लाल रंग कोई कहीं तैयार नहीं कर सक्ता। 'फ़िनिशिया' के समुद्र के किनारे जो बालू है उससे बहुत अच्छा शीशा बनता था। लिबानस पहाड़ की खान से तांबा और लोहा बहुत निकलता है। देवदारू, सखुआ आदि बहुत तरह की लकड़ियां भी उस में होती हैं। जिन नदियों का हाल ऊपर लिखा गया है उनके सबब वे सब लकड़ियां बहुत आसानी से समुद्र के किनारे लाई जाती हैं। और वहां के बन्दर बहुत बड़े बड़े हैं, और उनमें समुद्र के उपद्रव नहीं होते; इस कारण वहां जहाज़ अच्छी तरह से बनाये और रक्खे जाते हैं। इन सब कारणों से पुराने 'फ़िनिशिया' वाले सब जगह तिजारत करते थे। विशेष करके उनके देश की चारों ओर उन दिनों बहुत सभ्य लोग रहते थे। पूरब तरफ़ सिरिया, बैबिलन, और फ़ारस देश थे, दक्षिण और जुडिया और मिसर थे, उत्तर ओर फ़्राइजिया लिडिया और ग्रीस देश थे, और पश्चिम की तरफ़ भूमध्य सागर के दोनों ओर पृथ्वी के दो टुकड़े थे, इसीवास्ते खुश्की की राह से पूरब की चीज़ें लाकर 'फ़िनिशिया' वाले जहाज़ पर रख जहां चाहते थे वहां ले जाते थे। पहिले समय में 'फ़िनिशिया' पूरब और पश्चिम देशों की तिजारत का अड्डा था। पुराने 'फ़िनिशीय लोग काकेसीय जात वाले सेमेटिक बंश के थे, वे लोग बुद्धि विद्या और जवांमर्दी आदि में किसी जाति से कम न थे। पुराने 'फ़िनिशिया' वाले आजकल के यहूदियों के

सदृश थे, उनकी भाषा भी एक ही जात की थी अचर भी प्राय: यहूदी अचरों से थे और उन लोगों का आकार भी यहूदियों सा था। 'फ़िनिशिया' वाले बहुत तिजारत करते थे और समुद्र के किनारे के शहरों में बस्ते थे और समुद्र के किनारे से दूर इन लोगों में से बहुत कम लोग रहते थे। 'फ़िनिशिया' के ६ नगर प्रसिद्ध थे अर्थात् अंडस, ट्रिपलिस, बाइबेस, बेराइटस, साइडन और टायर। इन में टायर नगर सब से प्रसिद्ध था, लेकिन आजकल इन सब नगरों के बहुत से हिस्से बर्बाद हो गये हैं, केवल 'ट्रिपलिस' और 'बेराइटस' रहगये हैं। पहिले समय में जिस टायर नगर की बड़ाई का कुछ ठिकाना न था, जिस को कवि लोग सुबर्णपुरी कहते थे और जहां के एक एक बनिये दूसरे देश के राजाओं से भी अधिक धनी थे; आज कल उसी टायर का नाम भी कोई नहीं जानता। वहां आजकल एक छोटा सा गांव रह गया है, वहां के बहुतेरे लोग चिड़िमार का काम करते हैं। वे लोग अपने रहने की जगह को 'सूर' कहते हैं। आजकल के देशाटन करने वाले लोग 'फ़िनिशिया' के प्राचीन नगरों के चिन्हों को देख कर कहते हैं कि इतिहास में इस देश की बड़ाई का हाल जो कुछ लिखा है सब सच ही सच्चा है। लेकिन 'फ़िनिशिया' वालों की इन सब बड़ाइयों की बहुत निशानियां लोप हो गई हैं और जो कुछ बाक़ी भी हैं सो भी धीरे धीरे नष्ट हुई जाती हैं। पर वे लोग अपनी बुद्धि बल से जो काम कर गये हैं वे सदा

अचल रहेंगे। 'फिनिशिया' वालों ने यूरोप में अक्षर लिखने की रीति निकाली थी, सिक्के का चलन जारी किया था, तौल नाप के कायदे बनाये थे, और बहुत देशों में उपनिवेश यानी अपने देश वालों की नई बस्तियां बसा कर चारों तरफ़ बनिज फैलाया था। पुराने 'फ़िनिशिया' वालों ने आदमियों की ऐसी भलाइयां कर गये हैं कि जिन से लोग आज तक "फ़िनिशिया" का ठीक इतिहास जानने के लिये बहुत यत्न कर रहे हैं।

दूसरा अध्याय।

फ़िनिशिया वालों के राजनियम और धर्म।

फ़िनिशीय लोगों के राज की रीति किस तरह की थी यह अच्छी तरह से हम लोगों को मालूम नहीं है; सिर्फ़ इतना जाना गया है कि पहिले उस देश के हर एक नगर में एक एक आदमी सर्दार बनकर राज्य का काम काज चलाता था। इसके बाद 'टायर' नगर वालों ने सब से प्रबल हो कर सब देश को अपने अधीन कर लिया किन्तु 'टायर' की बढ़ती के पीछे या पहिले भी 'फ़िनिशिया' में कोई स्वतन्त्र राजा नहीं था, इतिहास में लिखा है कि किसी समय

'फ़िनिशिया' वाले अपने देश के मालिक को राजा कहने के बदले 'सकेती' या 'शान्तिरक्षक' कहा करते थे। इस से मालूम होता है कि 'एशिया' के और देशों में जैसी स्वेच्छाचारी राज की रीति सदा से चली आई है वैसी 'फ़िनिशिया' वालों में जो तिजारत करने वाले थे कभी नहीं हुई थी। लेकिन ऐसा अच्छा राज रहने पर भी पुराने 'फ़िनिशिया' वालों के धर्म्म की रीत ऐसी अच्छी नहीं मालूम होती। उनमें बहुत तरह के देव देवियों की पूजा जारी थी 'बेलसीमन' 'आर्ष्टोटि' और 'मेलकार्टस' ये तीन बड़े देवता गिने जाते थे। 'बेलसिमन' शब्द का अर्थ स्वर्गाधिपति अर्थात् सूर्य्य है, हम लोग जैसे संध्या बन्दन के समय सूर्य्य का ध्यान करते हैं वैसे ही 'बेलसीमन' की भी उपासना की जाती थी। 'बेलसीमन' के और भी बहुत से नाम थे, जैसे 'थामज' 'आडोनिस' इत्यादि। 'आर्ष्टोटि' शब्द का अर्थ स्वर्ग की मालिकन है प्राचीन लोग चन्द्रमा को स्त्री कहते थे, इस से मालूम होता है कि 'फ़िनिशिया' वाले चन्द्रमा ही को 'आर्ष्टोटि देवी के नाम से पूजते थे, किन्तु आर्ष्टोटि के अनेक रूप थे, जैसे हमलोग देवी के अनेक रूप मानते हैं वैसे ही "फ़िनिशिया" वालों ने भी "आर्ष्टोटि" के अनेक नाम बना लिये थे। हर एक नये बरस के पहिले दिन इस देवी की पूजा बड़े धूम धाम से होती थी। कहते हैं कि उस दिन औरतें सिर मुड़ामुड़ा कर इस देवी

की पूजा करती थीं, जो सिर नहीं मुड़ाती थीं उन को कसब करके खर्ची कमानी पड़ती थी और उसी खर्ची की कमाई से उनको देबी की पूजा चढ़ानी पड़ती थी। यही उनके पाप का प्रायश्चित था।

"फ़िनिशिया" देश में "आमिडोनिस" नाम एक नदी थी, बर्सात में उस नदी का पानी बहुत लाल हो जाता था, इसका कारण यह था कि "लिबानस" पहाड़ में एक तरह की लाल मिट्टी थी, बर्सात के पानी से वह नदी में बह आती थी "फ़िनिशिया" वाले इसका कारण कुछ और ही बतलाते थे, वे कहते थे कि एक दिन "बीनस" देवी "बेलसीमन" की अवतार परम सुंदर 'आडोनिस' नाम एक युबा पुरुष को देख कर उस पर मोहित हुई इस पर 'बीनस' के स्वामी 'मार्श' देव ने अति क्रोध कर बन शूकर का रूप धरा और 'आडोनिस' को मारडाला। 'आडोनिस' मरने के बाद यमलोक में गया वहां की देबी 'प्रसर्पीन' का बिबाह इसके साथ हुआ। लेकिन 'आडोनीस' के मरने पर भी 'बीनस' का मन उसी पर था, वह भी 'आडोनीस' के पीछे पीछे यमलोक गई, वहां 'प्रसर्पीन' के साथ उसकी बड़ी लड़ाई हुई। इस के बाद दोनों में यह बात ठहरी कि 'आडोनिस' छ महीने 'प्रसर्पीन' के साथ और छ महीने बीनस के साथ रहा करे। फ़िनिशिया वाले कहते थे कि बन शूकर के दांतों की लगने से 'आडो-

'नोस्रू' के शरीर से जो लोहू बहा था उसी से 'आडोनिस' नदी के पानी का रंग लाल हो गया है। जब बर्षा के समय उस नदी का पानी लाल होजाता है तो वहां की औरतें बड़ा ग़म मनाती हैं।

पंडित लोग कहते हैं कि इस इतिहास का एक गूढ़ मतलब है—वे 'आडोनीस' का अर्थ 'उत्तरायन' और 'पर्सपीन' का 'दक्षिणायन' बतलाते हैं और बन शूकर का अर्थ हेमन्त ऋतु लगाते हैं। वह सूर्य्य को छः महीने "दक्षिणायन" में "पर्सपीन" के साथ रखता है और उसके बाद छः महीने 'उत्तरायन' या 'बीनस' देवी के साथ रहने देता है। 'मेलिकर्टस' देव की पूजा इन सबों से भी भयानक थी, जब जहाज़ रेती पर चढ़ जाता था या ख़राब हवा से तिजारत के काम रुक जाते थे या और किसी तरह की बिपद आपड़ती थी तो फ़िनिशिया वाले उस देवता को नरबलि चढ़ाते थे। मा बाप भी बिपद से छूटने के लिये आप अपने लड़कों को आग में आहुति देकर 'मेलिकर्टस' को खुश करते थे। पुराने 'फ़िनिशिया' वालों ने धर्म्म की बहुत उन्नति नहीं की थी। उन लोगों का मन सिर्फ़ तिजारत में लगा था, वे लोग खुश्की राह से हिन्दुस्तान तक आदमी भेजते थे और वहां से अपने काम की चीज़ें मंगवाते थे, और उत्तर में वे लोग भूमध्य-सागर की राह से 'ब्रिटन' और शायद 'बाल्टीक' समुद्र तक जाया करते थे। 'स्पेन' के सोना, रूपा, लोहा आदि धातु—

'इंगलाण्ड' का अम्बर—'सरकेशिया' के सुन्दर दास दासी—'आरमेनिया' के घोड़े और खच्चड़—हिन्दुस्तान के कपड़े, हाथी दांत, आबनूस की लकड़ी—'पालेष्टीन' के अनाज, सहत, तेल, और गोंद—'सिरिया' की ऊन और इसी तरह से और बहुत देशों की अच्छी अच्छी चीज़ें 'फ़िनिशिया' में भेजी जाती थीं। प्राचीन समय में 'फ़िनिशिया' वालों के बराबर और किसी जाति के लोगों ने तिजारत में उन्नति नहीं की थी। फ़िनिशिया के लोग दूसरे देश के लोगों को समुद्र की राह नहीं बतलाते थे, अगर किसी दूसरे देश वालों का जहाज़ उन लोगों के जहाज़ के साथ जाता था तो वे लोग उसे दग़ाबाजी से राह भटका देते थे, और जब देखते थे कि किसी तरह विदेशी जहाज़ संग नहीं छोड़ता तो अपनी जान पर खेल अपना ही जहाज़ खराब राह से ले जाते थे या यहां तक करते थे कि आप अपना जहाज़ डुबा देते थे। इस लिये किसी दूसरे देश वालों का जहाज़ फिर अपने देश को लौट कर कभी नहीं जा सकता था वरन समुद्र में मारा पड़ता था। इस तरह उस समय दुनियां की सब तिजारत 'फ़िनिशिया' वालों के हाथ में थी, इस लिये वे लोग जहाज़ चलाने में बहुत निपुण होते थे, उस समय में जब किसी देश का राजा जहाज़ बनवाना चाहता था तो 'फिनिशिया' के कारीगरों से बनवाता था। और अगर किसी को समुद्र की

राह से किसी दूर देश में जाना जरूर पड़ता था तो उसको 'फ़िनिशिया' के जहाजी माझियों की सहायता लेनी पड़ती थी। 'नेको' नामी मिसर देश के राजा ने आफ्रिका के दक्षिणी हिस्सों का हाल जानना चाहा था, तो उसने इस काम के लिये 'फ़िनिशीय' जहाजी मांझियों को नौकर रक्खा था। वे लोग लाल समुद्र में जहाज़ पर सवार हुए और जाते जाते 'गुडहोप' अन्तरीप के गिर्द घूमकर फिर उत्तर आये और 'जिबराल्टर' के मुहाने से भूमध्य सागर में पैठे और उसी तरह चलते चलते 'मिसर' देश की नील नदी में वे लोग फिर लौट आये। इस सफ़र में उन लोगों को पूरे तीन बरस लगे थे।

यह सच है कि फ़िनिशीय पुराने समय के सब लोगों से जहाज़ के काम में बहुत होशियार थे, पर वे लोग चुम्बक पत्थर का गुन नहीं जानते थे और आज काल के 'यूरोप' वालों की तरह ज्योतिषविद्या भी नहीं जानते थे। और वे लोग बड़े बड़े जहाज जैसे कि आज कल बनते हैं नहीं बना सक्ते थे, इन्हीं सब सबबों से उनके जहाज़ समुद्र के बीच में से नहीं चल सक्ते थे, वे लोग सदा समुद्र के किनारे किनारे अपने जहाज़ों को लेजाया करते थे। जब उनको समुद्र का किनारा नहीं नज़र आता था तो वे अक्सर राह भूल जाते थे और तब उनके जहाज़ मारे पड़ते थे। इस लिये समुद्र की सफ़र

में उन लोगों का बहुत समय लगता था। जहाज़ के जाने में बहुत दिन लगता था इसी लिये उन लोगों को बहुत राह खर्च भी साथ लेना पड़ता था, लेकिन उनके जहाज़ छोटे होते थे उन में बहुत से असबाब नहीं अंट सक्ते थे। फ़िनिशिया वालों ने इस का उपाय यह किया कि रास्तों में बहुत से उपनिवेश यानी नई बस्तियां टिकने के लिये बसाईं, इन सब नई बस्तियों के लोगों ने भी अपने देशों के चारो तरफ़ तिजारत फैला रक्खी थी। इस कारण वे लोग भी बहुत धनी और ज़ोरावर हो गये थे। फ़िनिशिया वालों की नई बस्तियां बहुत सी जगहों में थीं, उन में से आफ्रिका में 'कार्थेज' और 'यूटिका' और 'स्पेन' देश में 'केडिस' बहुत प्रसिद्ध थीं। इन सब नईबस्तियों के रहने वालों ने भी और बहुत सी छोटी छोटी बस्तियां बसाई थीं। 'फ़िनिशिया' बहुत छोटा देश था, लेकिन उस को तिजारत और नई बस्तियां बहुत थीं और वहां के लोग धनी और कारीगरी और ज्योतिष आदि काम की विद्या में बड़े निपुण थे। इस लिये अगर फ़िनिशिया की आज कल के किसी देश के साथ तुलना करना चाहें तो सिर्फ़ 'इंगलैण्ड' से हो सक्ती है। जैसे आज कल हम लोग किसी अच्छी कारीगरी को देखते ही कहते हैं कि विलायती है वैसे ही पुराने समय के लोग भी अति सुन्दर शिल्प को देखते ही उस को 'साइडो-नीय' कहते थे।

तीसरा अध्याय।

फ़िनिशियावालों के पुरान की कथा।

फ़िनिशिया वालों ने बहुत पुराने समय से अपना हाल लिखना शुरू किया था, वहां जो लोग काबिरि नाम पण्डितों के बंश के थे वे बहुत यत्न से अपने देश के पुराने हालों को लिख रखते थे। लेकिन उन के सब लेख आज कल नहीं मिलते उन में से कुछ थोड़े से 'सांकनियाथो' नाम एक पुराने फ़िनिशिया के पण्डित ने संग्रह कर रक्खे थे। लेकिन उस संग्रह में से भी बहुत से बर्बाद हो गए हैं। फ़रलो नाम एक ग्रीस के पण्डित ने उस संग्रह के कुछ थोड़े हिस्सों का उलथा यूनानी भाषा में किया है और उस यूनानी किताब का उलथा अंग्रेजी में हुआ है उस को ख़ास बातें इस अध्याय में लिखते हैं।

'सांकोनियाथो' ने लिखा है कि पृथ्वी और जीव जन्तु की रचना के बाद 'प्रोटोगोनस' अर्थात् सब के पहिले बना, और 'इयन' अर्थात जीवन नाम आदि स्त्री पुरुष उत्पन्न हुए। वृक्ष का फल आदमियों के खाने की चीज़ है यह बात पहिले इसी इयन ने जनाया इस स्त्री पुरुष को जिनस नामी एक पुत्र और जिनिया

नामी एक कन्या हुई। इन दोनों ने किसी समय प्यासे हो कर वेलसिमन (सूर्य्य) की ओर हाथ उठा कर पानी मागा और सूर्य्य देव ने पानी दे इन को प्यास बुझाई। इन्हीं जिनस और जिनिया के तीन पुत्र हुए उनके नाम 'फस' (आलोक) फर (ताप) और फ्लक्स (अग्नि-शिखा) थे, इन लोगों ने लकड़ियों को आपस में घस कर आग सिकालने की तदबीर निकाली थी, और इन्ही लोगों ने वायु और अग्नि की पूजा जारी की थी। कहते हैं कि इन सबों के लड़के बहुत लंबे चौड़े थे उन्हीं के नाम से 'लाइबेनस' आदि बड़े बड़े पर्व्वतों के नाम पड़े हैं। ये दैत्य लड़के पहिले पहल झोपड़ी बना कर रहते थे और जानवरों का चमड़ा पहनते थे और हर दरख़्त की डालियों पर सवार हो कर पानी पर तैरते सैर किया करते थे। इनकी छठी पुश्त में जो पैदा हुए उन लोगों ने शिकार करना और मछली पकड़ना सीखा। सातवीं पुश्त के लोगों ने लोहे का काम और ईंटे का मकान बनाना सीखा। आठवीं पीढ़ी के लोग धरती जोतने लगे, दसवीं पीढ़ीं के लोग मवेशी पालने लगे। ग्यारहवीं पुश्त में युरेनस् (आकाश) नाम पुत्र और जी (पृथ्वी) नामी कन्या हुई, इनके बेटे 'क्रोनस' (शनिश्चर) और आस्टार्टी (चन्द्र) हुए। क्रोनस की और तीन सौतेली बहन हुईं उनके नाम एमार्मिन, हीरा और रीया (अर्थात भाग, रूप, और अच्छी बुद्धि) पड़े। इन तीनों

के गर्भ से क्रोनस के कई लड़के पैदा हुए। क्रोनस ने जिस लड़के को जिस देश का अधिकार दिया वह वहां का बड़ा देवता माना जाने लगा। क्रोनस के प्रधान मंत्री का नाम 'थख,' था, वह भी एक देवता था, उसी देवता की आज्ञा से ये सब गूढ़ बातें लिखी गई और ऊपर लिखी हुई देवताओं की मूर्त्तियां बनाई गई। क्रोनस देवता के चार आंखें थीं, दो आगे और दो पीछे, उन में दो खुली और दो बन्द रहती थीं, उसको पीठ पर चार डैने थे उन में से दो बन्द और दो खुले हुए थे, क्रोनस के सिर पर भी दो पंख थे 'सांकोनियाथो' कहता है कि इन सब गूढ़ बातों का ठीक मतलब किसी बड़े धार्म्मिक मनुष्य को मालूम था, उससे फ़िनिशिया के अच्छे अच्छे पण्डित सीखते थे, उन सब बातों का अर्थ लिखा नहीं जा सकता सिर्फ़ अपने अपने गुरू से पण्डित लोग जान सकते हैं। यद्यपि उन बातों का असल अर्थ नहीं समझा जा सकता है तो भी विद्या की रीति के बारे में जो जो बातें पहिले कही गई हैं उनके साथ ये सब बातें बहुत मिलती हैं। और इस में भी कुछ संदेह नहीं होता कि फ़िनिशिया देश वालों के पुरान का हाल दूसरे देश वालों के पुरान के साथ मिलता है। सब देशों के पुरान की कथा, कुछ तो ठीक हाल और कुछ शिक्षा की कहानियां संग्रह कर बनती हैं।

फ़िनिशिया का सब से पहिला राजा 'आजिनर' था, उसने मिसर से उस देश में आकर ईडन नगर बसाया था। कहते हैं कि 'क्रीट टापू' के जुपिटर नाम किसी राजा ने 'आज़िनर' राजा की यूरोपा नाम सुन्दर कन्या को हर ले गया, इस लिये 'आजिनर' ने अपने बेटे 'काडमस्' को हुकुम दिया कि तुम यूरोपा को छुड़ा लाओ और जब तक उसको मेरे पास न लासको तब तक अपना मुंह मुझे न दिखाओ, 'काडमस्' ने अपने जी में सोचा कि मैं अपनी बहन को न छुड़ा सकूंगा, इस लिये थोड़े से आदमियों को अपने साथ लेकर अपने मुल्क से चल दिया और ग्रीस के इलाके 'बियोशिया' में जा एक उपनिवेश यानी नई बस्ती बसाया, उसके बसाये हुए नगर का नाम कुछ दिनों के बाद 'थिबस' हुआ, ग्रीस के इतिहास में यह नगर बहुत ही प्रसिद्ध है। काडमस ने ग्रीस में जाते ही वहां के असभ्य लोगों को खेती बारी का काम और लिखना पढ़ना सिखाया, आजिनर के मरने के बाद उसका बेटा 'फ़िनिकस' राजा हुआ। कहते हैं कि उसी ने पहिले पहल लाल रंग बनाने का उपाय निकाला। मालूम होता है कि वह बहुत ही प्रबल राजा था, क्योंकि उसी के नाम से सारे देश का नाम फिनिशिया रक्खा गया है, फ़िनिकस के बाद जो राजा हुआ उसका कुछ भी हाल मालूम नहीं है, ग्रीस वालों के बड़े कवि 'होमर' ने अपनी किताब में लिखा है

कि जब ग्रीक वालों ने 'ट्राय' नगर पर चढ़ाई की थी तब 'फ़िनिशिया' के प्रसिद्ध राजा 'कालिस' ने उन लोगों को शरण दी थी। ऊपर लिखे हुए तीन राजाओं का हाल ग्रीक लोगों की किताबों से मिला हैं लेकिन उस हाल के साथ इतनी गप मिली हुई है कि उस में सच कितना है ठीक नहीं मालूम हो सकता। इस लिये इसे भी फ़िनिशिया वालों के पुराण की कथा के साथ लिख दिया है, प्रमाणिक हाल अगिले अध्याय में लिखा जायगा।

चौथा अध्याय।

फ़िनिशिया के राजाओं का पुराना हाल।

किसी भी जाति के पुराण की कथा और उसके पुराने ठीक हालों को आपस में मिला के देखने से यह मालूम होता है कि सब देशों के पुराण की कथा साफ़ और पूरी है, क्यों कि कहते हैं कि सब देशों के पुराण लिखने वालों पर देवताओं की कृपा रहती थी। वे लोग किसी की सहायता बिना आपही अनायास देव बल से सब पुराने हालों को जान लेते थे, और लिख देते थे, लेकिन जो लोग

ठीक सही हाल लिखना चाहते हैं उन लोगों को पुरानी किताबें देखनी पड़तीं हैं। बहुत से लिखने वालों के भिन्न भिन्न मत मिलाने पड़ते हैं और पुराने सिक्के और कीर्ति स्तंभ आदि वस्तुओं को देखना भालना पड़ता है। यह सब करने पर भी बहुत सी जगहों में उनकी अक्ल चकरा जाती है क्यों कि पुरानी किताबें हर एक बातों को सदा सब जगह नहीं मिलतीं, और बहुतसी बातों में सब लिखने वालों का मत एक नहीं होता इस लिये उन लोगों का बयान बहुत जगह अधूरा रह जाता है।

'फ़िनिशिया' वालों के पुराण की कथा जो पहिले अध्याय में लिखी गई है सो 'थख्' देवता की कृपा से बनी थी और प्रायः सब प्रकार पूरी कही जा सकती है। उस में पहिले मनुष्य और पहिली स्त्री के नाम और उनके पुत्र पौत्र वग़ैरह कई पीढ़ियों तक का कुछ हाल लिखा है, लेकिन फ़िनिशिया वालों का ठीक सही इतिहास लिखने के लिये कितनी खाक छानने पर भी उस देश के राजाओं के नाम तक का पता नहीं लगता। कहते हैं कि नोया के पर पोते 'साइडन' ने फ़िनिशिया के 'साइडन' नगर को बसाया था। यह बात पन्द्रह सौ अस्सी बरस ईसा के जन्म के पहिले हुई, लेकिन इस के बाद बहुत दिनों तक साइडन नगर के और किसी राजा का पता नहीं मिलता। चार सौ इकासी बरस ईसा के जन्म के पहिले साइडन का राजा फ़ारस के राजा 'ज़र्कसीस' के साथ

ग्रीस देश में दिग्विजय करने गया, इस के बाद कुछ दिनों तक साइडन का कुछ भी हाल नही मिलता। तीन सौ इक्यावन बरस ईसा के जन्म के पहिले वहां का एक राजा फ़ारस के राजा 'दरायुस 'ज़र्क्सेस' से लड़ाई में हार गया। इन सब हालों के लिखने से कुछ फ़ायदा नहीं, भला कई एक मरे हुए राजाओं के सिर्फ़ नाम लिखने में क्या फल हो सक्ता है। इस लिये यहां सिर्फ़ ऐसे ठीक हालों को लिखते हैं कि जिनके पढ़ने से अच्छा उपदेश या उस समय के फ़िनिशियों वालों के रीति व्यवहार के बारे में कुछ जाना जा सक्ता है।

एक हजार छयालीस बरस ईसा के जन्म के पहिले 'हाइराम' नामी एक राजा 'टायर' नगर में राज करता था। उसको विद्या का बड़ा ही शौक था; उसके समय में पालिष्टीन का राजा 'सलिमान' भी दुनियां के सब पण्डितों में बड़ा गिना जाता था। इन दोनों राजाओं में बड़ी प्रीति थी, ये दोनों आपस में कठिन कठिन पहेलियों का पूछ पाछ करते थे जो उन पहेलियों को बूझ नहीं सकता था वह कुछ धन हारता था। पहिले समय के पण्डित लोग गूढ़ बचनों के अर्थ लगाने में बहुत समय बिताते थे। उन दिनों पण्डितों की परीक्षा इसी में हुआ करती थी। इन दोनों राजाओं की लिखी हुई चिठ्ठियां आज तक हैं. उन को देखने से यह मालूम होता है कि फ़िनिशिया के लोग शिल्प विद्या में बड़े निपुण

थे। फ़िनिशिया के कारीगरों की सहायता से पालेष्टीन के राजा ने अपनी राजधानी 'यरुसालेम' में जगत् प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया था। हाईराम ने भी अपने देश में बहुत से देवालय और नहरें बनवाई थीं।

नौ सौ बासठ बरस ईसा के जन्म के पहिले 'पिग्मेलियन' नामी एक मनुष्य 'टायर' के राजसिंहासन पर बैठा, उसका बहनोई 'मेलीकार्टस' देवता का पण्डा था; इसने पण्डे के काम से बहुत रुपये जमा किये थे; राजाने उस का धन लेने के लिये उस को मारडाला। लेकिन राजा की बहन डाइडो सब रुपये लेकर अपने मुल्क से चली गई और 'कार्थेज' नगर बसाकर वहां रहने लगी। यह 'कार्थेज' नगर कुछ दिन बाद बहुत प्रसिद्ध हो गया।

सात सौ सत्रह बरस ईसा के जन्म के पहिले 'ईलूइलियस' नाम एक 'टायर' का राजा था। उस समय में 'आसिरिया' के राजा 'सलमानसर' ने फ़िनिशिया देश पर चढ़ाई की। वह साठ जहाज़ तैयार कर 'टायर' वालों के साथ लड़ने आया, लेकिन टायर वालों ने सिर्फ़ बारह जहाज़ों से उस को जीत लिया। 'सलमानसर' डर कर अपने देश को लौट गया।

पांच सौ बहत्तर बरस ईसा के जन्म के पहिले 'बेबिलन' के राजा 'नेबूकड्नेसर' ने "टायर नगर पर चढ़ाई की। उस की सेना बहुत थी तौभी 'टायर' वाले तेरह बरस तक उस के साथ लड़ते रहे। निदान उसने टायर नगर के बाहर

मिट्टी का एक इतना बड़ा टीला बनवाया कि वह नगर की दिवार से भी ऊंचा हुआ, तब उसकी सेना उस पर चढ़ कर नगर पर अस्त्र बरसने लगी; इस लिये टायर वाले जहाज़ों पर चढ़ भाग गये और कुछ दूर जाके एक टापू में एक नया नगर बना कर रहने लगे, उस नगर का नाम नया 'टायर' पड़ा। लेकिन उस नये टायर के लोगों ने नेबूकड़नेसर' को ताबेदारी क़बूल की और उसको खुश करके वहां से बिदा किया। उसी समय से 'फ़िनिशिया' देश आसीरिया राज्य के अधीन हुआ। जब फ़ारस वालों ने बेबिलन' राज फ़तह किया तब उस के साथ फ़िनिशिया देश भी फ़ारसियों के हाथ में आगया लेकिन फ़ारस के राजा लोग फ़िनिशिया वालों को बहुत मानते थे फ़िनिशिया की कारीगरों से जहाज़ बनवाते थे और फ़िनिशिया के माझियों से जहाज़ चलाने का काम लेते थे। लेकिन आसीरिया और फ़ारस के राज्य के समय में फ़िनिशिया वालों में से एक एक आदमी को सर्दार बना कर देश का बन्दोबस्त किया जाता था। उन राजाओं ने फ़िनिशियां के राज का काम करने के लिये अपने देश के लोगों को मुक़र्रर नही किया था।

चार सौ अस्सी बरस ईसा के पहिले 'ष्ट्रेटो' नामी एक आदमी फ़िनिशिया की राजगद्दी पर था; उस के राजा होने का हाल यह है। 'टायर' वाले तिजारत के ज़रिये से धन में बहुत बढ़ गये थे, धन के होने से लोगों को सुख भोग की ख़ाहिश होती है और तब मिहनत अच्छी

नहीं लगतो। फ़िनिशिया वाले भी अपने दासों ही से सब काम लेने लगे इस लिये उन की प्रधान नगर टायर में दास लोग बहुत बढ़ गये। और उन लोगों ने एक मत करके एक ही रात में अपने सब नगर वाले मालिकों को मार डाला और उन को स्त्रियों से बिवाह कर कर उन के घरों के आप मालिक बन बैठे। दास लोगों में तिलाक दिया गया था इस कारण कोई भी मालिक नगर में बचने न पाया, केवल एक 'स्ट्रेटो' के दास ने उस को बचा कर छिपा रक्खा था। दास लोग इस तरह से सारे नगर को अपने कब्जे में कर के यह बिचार करने लगे कि उन लोगों में से कौन और कैसे राजा हो। निदान यह बात ठहरी कि वे लोग ठीक आधीरात के समय नगर के पूरब तरफ़ बड़े मैदान में इकट्ठे हों और दूसरे दिन सुबह को सूर्य्य देव जिस को सब से पहले दर्शन दें वही राजा हो। स्ट्रेटो के दास ने अपने मालिक से यह सब हाल कहा तब स्ट्रेटो ने उसे सिखाया कि तुम उस मैदान में जाकर पश्चिम तरफ़ नगर की ओर देखते रहियो सब से पहिले सूर्य्य देव तुमहीं को दर्शन देंगे उसके दास ने ऐसाही किया; और पुरब तरफ़ सूर्य्य देखाने के पहले ही 'टायर' के बहुत ऊंचे कोठों पर सूर्य्य की धूप पड़ी, तो उस दास ने लोगों को दिखाया; तब लोग तअज्जुब करने, और सोचने लगे कि इस आदमी ने अपनी अक़्ल से कभी नहीं ऐसा काम किया है, इस को सिखाने वाला जरूर कोई दूसरा है। यह

ख़याल कर, उन लोगों ने उस्से बहुत तरह से पूछा; तब उसने असल बात कह दी। तब दास लोगों ने बिचार किया कि जो आदमी ऐसे समय में बचा है उसका भाग बेशक बहुत प्रबल है इसलिये उसी को राजा बनाना चाहिये। 'ष्ट्रेटो' इस तरह से राजा हुआ। कुछ दिन तक 'ष्ट्रेटो' के वंश वालों ने सुख चैन से राज किया।

तीन सौ तेतीस बरस ईसा के पहले सिकन्दर ने 'टायर' के निकट आकर उस नगर में घुसना चाहा, लेकिन नगर वालों ने उसको रोका; इस लिये बड़ी लड़ाई मची। 'टायर' नगर टापू में था, केवल पानी की राह उसमें जाना पड़ता था; और जहाजी लड़ाई में 'फ़िनिशीय' लोग बहुत प्रबल थे; इस लिये सिकन्दर ने बड़ी मुश्किलों से समुद्र में एक बांध बाधा, और उस पर से पार उतर कर नगर पर हमला किया और फ़तह कर लिया। वह बांध अब तक बना है, इस बांध के बने रहने से 'टायर' जैसा पहले टापू सा देख पड़ता था अब वैसा नहीं मालूम होता, उस के तीन तरफ़ पानी और एक तरफ सिकन्दर का बांधा बांध है। सिकन्दर ने इस तरह से 'टायर' को फ़तह किया और बिलकुल बर्बाद कर दिया। कहते हैं कि इस लड़ाई के प्रारम्भ ही में 'टायर' का प्रसिद्ध देवता शत्रु की तरफ जाने चाहता था; नगर वालों ने अपने पुरोहितों से यह बात सुन कर उस को सोने की जंजीर में बांध रक्खा था। सिकन्दर ने 'टा-

घर' में दाखिल होकर उस देवता की बड़ी स्तुति की और आप अपने हाथ उस के बंधन को खोल दिया।

'हेपिस्टियन' सिकन्दर का बड़ा प्रिय था; 'सिकन्दर' ने 'फिनिशिया' के 'साइडन' नगर को फतह करके उससे कहा कि तुम जिसे चाहो उसी को इस नगर का राज दो। जिस दिन यह बात हुई उसके एक दिन पहले 'फिनिशिया' के किसी बड़े आदमी के यहां 'हेपिस्टियन' की मेहमानी हुई थी, इस ने उसको राजा बनाना चाहा; लेकिन उस आदमी ने राज के लोभ में न आकर यह कहा कि मुझे माफ कीजिये क्योंकि मैं राज बंश का नहीं हूं, इस लिये मुझे राज लेना उचित नहीं, 'हेपिस्टियन' को उस आदमी का यह नेक चलन देख बड़ा ताअज्जुब हुआ और कहा कि तुम आप राजा होना नहीं चाहते हो तो राजा के बंश के किसी आदमी को बताओ हम उसी को राजा बनावेंगे। उसने 'वेलेनिमस' का नाम बताया; वह राज बंश में उत्पन्न हुआ था, लेकिन ऐसा दरिद्र हो गया था कि अपने हाथ से खेती बारी कर अपना दिन काटता था। जिस समय 'हेपिस्टियन' के आदमी लोग उसके पास राज की खिताब देने और खिलत पहराने गये, उस वक्त वह फटा पुराना कपड़ा पहने कुंए से पानी भर रहा था। राजा होने पर भी उसका स्वभाव कुछ न बदला; वहां के लोग उस के नेक चलन का

हाल पहले ही से जानते थे इस लिये उसके राजा होने पर सब लोगों ने बड़ी खुशी जाहिर की।

छठा प्रकरण।

"असीरिया" और "बैबिलोनिया" वालों का बयान।

पहला अध्याय।

असल "असीरिया" देश "टाइग्रीस" नदी के पूरब किनारे पर था। "असीरिया" का बड़ा हिस्सा आज कल "कुर्दस्थान" में मिल गया है; लेकिन "असीरिया" वालों ने "टाइग्रीस" और "यूफ्रेटीस" के बीच के सब देशों को, और "यूफ्रेटीस" के पार पश्चिम के कुछ देशों को अपने राज में मिला लिया था, इस लिये "असीरिया" कहने से कभी कभी ऊपर लिखेहुए सब देश भी समझे जाते हैं। "टाइग्रीस" नदी के पूरब ओर जो देश था उस में आर्य्य जाति के लोग रहते थे। और उस नदी के पश्चिम का देश 'सेमिटिक' जाति का आदि निवासस्थान था, इस लिये कह सकते हैं कि "असीरिया" राज में दो जातिके लोग रहतेथे; उन में से आर्य्य लोग किसी समय बहुत प्रबल हो गये थे; और अपने परोसी "सेमिटिक" लोगों को अपने अधीन कर

लिया था। उन आर्य्य लोगों की राजधानी का नाम "निनेवा" नगर था; आज कल "एशियाइटर्की" के बीच जहां "मोसल" नगर है; उसी के निकट किसी जगह में "निनेवा" राजधानी थी। "बटा" नामी एक फ्रांसीसी और "लेयार्ड" नामी एक अंगरेज़ ने वहां की बहुत सी जगहों को खोद कर प्राचीन "निनेवा" के बहुत से चिन्ह निकाले हैं। उन्हों ने जिन खोदी हुई पुरानी मुर्तियों और बहुत सी दूसरी चीजों को निकाला है, उन सबों को देखने से यह मालूम होता है कि किसी समय "निनेवा" शहर वाले शिल्प-विद्या में बहुत निपुण थे। और उन मूर्ति आदि चोजों में उस पुरानी समय की बहुत सी बातें भी खोदी हुई हैं, उन में खोदे हुए अक्षरों के ऊपर का हिस्सा पतला और नीचे का मोटा है; इस कारण उन को "सूच्यग्र" कहते हैं। आज तक उन "सूच्यग्र" अक्षरों के पढ़ने का कोई उपाय नहीं निकला है; अगर उस का कोई उपाय मालूम हो तो "असीरिया" वालों के पुरानी इतिहास की बहुत सी बातें मालूम हो जांय; आज कल "असीरिया" वालों का हाल अच्छी तरह से नहीं मालूम है।

"यहूदी" लोगों की प्रसिद्ध "बाइबल" नाम किताब में लिखा है कि "आसर" नामी किसी आदमी ने "बेबि-लन" से जाकर "निनेवा" नगर को बसाया था। लेकिन "यूनानी" किताबों से यह मालूम होता है कि "निनेवा"

नगर "वेबिलन" से भी पहले बसा था। यूनानियों का यह मत है कि इस नगर का बसाने वाला "नाइनस" था; इस ने बहुत से देशों को जीत कर निदान "वाकट्रा" नगर पर चढ़ाई की; वहां वह बड़ी बिपत में पड़ा और अपने एक सेनापति की स्त्री "सेमिरेमिस" की चतुराई से उस बिपत से छुटकारा पायर, इसी कारण "सेमिरेमिस" से बिबाह किया। और अपने मरने के समय उस को अपनी राज गद्दी दे गया। "सेमिरेमिस" ने बहुत देशों को बिजय किया और प्रसिद्ध "वेबिलन" नगर बसाया।

लिखने वालों में ऐसे ऐसे मत भेद पड़ने के कारण "असीरिया" वालों के पुराने ठीक हाल का पता लगना बहुत कठिन है। "बाइबिल" से यह मालूम होता है कि "असीरिया" वालों ने बहुत प्रबल हो कर "वेबिलन" "सीरिया" "पैलेसटीन" "फ़िनिशिया" आदि अनेक देशों को जीता था; और कभी कभी 'मिसर' देश पर भी चढ़ाई की थी। कहते हैं कि "फल" नामी "असीरिया" के राजा ने पश्चिम "पैलेसटीन" तक अपनर अधिकार बढ़ाया था, उस के बाद "टिगलाथपाइलेसर" ने "सीरिया" की राजधानी "डमास्कस" नगर को ले लिया था और वह 'यहूदियों' से भी कर लेता था। उस के पीछे "सलमानसूर" नामी किसी राजा ने "फ़िनिशिया" आदि बहुत देशों को बिजय कर "इसराइल" राज को बर्बाद किया और वहां के रहने वाले "यहूदियों" को कैद कर ले गया;

उस राज के वारिस "सानहेरिब" ने 'मिसर' पर चढ़ाई की। उस के बाद "आसारहाडन" नामी किसी राजा ने "निनेवा" नगर में राज किया; इस के समय से "असीरिया" वालों का जोर धीरे धीरे घटने लगा; निदान "वेविलन" नगर के राजा "नवपालासर" और "मिडिया" के राजा "काइआक्सरस" ने आपस में मिल कर सिर उठाया और "निनेवा" नगर को जड़ मूल से नाश किया। यह बात ६०५ बरस 'ईसा' के जन्म के पहले हुई।

"असीरिया" राज का यह सब हाल "बाइबल" से मिला है। पर 'यूनानी' लिखने वालों ने लिखा है कि 'सेमिरेमिस' ने बहुत से देशों को जीत कर अन्त को 'हिन्दुस्तान' पर चढ़ाई की; लेकिन 'हिन्दुस्तान' के महा प्रतापी राजा 'इस्टाब्रोबेटिस' ने उस को मार हटाया इस लिये "सेमिरेमिस" का जी टूट गया और वह 'वेबिलन' नगर को लौट आई। तब उस का बेटा पापी 'निनियास' ने उस को मार डाला। 'निनियास' ने राजा हो कर सिर्फ़ भोग बिलास में अपना दिन बिताया। उस के पीछे और उनतीस राजाओं ने भी वैसे ही सुख भोग में अपना दिन काटा; सबों के पीछे जो 'सार्डनापालस' राजा हुआ वह बहुत ही नालायक़ और ऐय्याश था। वह औरतों की तरह सिंगार करता था सदा रनिवास ही में रहता था और राज काज कुछ भी न देखता और न समझता था; इस लिये 'वेबिलन' और 'मिडिया' वाले औसर पाकर उस से

बिगड़ गये और चढ़ आये। तब 'सार्डनापालस' ने बिना युद्ध ही आप अपने को मार डाला, और तभी से 'निनिवा' का नाम लुप्त गया।

"असीरिया" के जो ये दो तरह के हाल लिखे गये हैं उन में जो 'बाइबल' में लिखा है वही अधिक सच मालूम होता है। क्योंकि 'यूनान' वालों ने जो हाल लिखा है उस में बहुत जगह दोष देख पड़ते हैं। यह बात संभव नहीं मालूम होती कि 'सेमिरेमिस' और 'नाइनस' सच सच दो आदमी रहे हों। यथार्थ में 'नाइनस' केवल 'निनिवा' नगर के अधिष्ठाता देवता का नाम था और 'सेमिरेमिस' 'सीरिया' देश की प्रधान देवी का नाम था। उन दोनों के जय करने के वर्णन से किसी केवल 'असीरिया' के पुराने समय की बड़ाई दिखानी है और दो किसी सच मनुष्यों की बड़ाई का वर्णन नहीं है।

पहले कह आये हैं कि 'बाइबल' के अनुसार 'बेबिलन' नगर 'निनिवा' से भी पुराना था। 'जलप्लावन' के कुछ दिन पीछे वह शहर बसाया गया था; उस का पहला राजा 'निमरूद' था। कुछ दिन बाद वह नगर 'निनिवा' के राजाओं के अधिकार में आया। इस तरह 'बेबिलन' पांच सौ बरस से भी कुछ अधिक काल तक 'असीरिया' वालों के अधीन रह कर फिर स्वाधीन हुआ। 'असीरिया' वालों ने फिर उस नगर को बिजय किया; निदान ६०५ बरस ईसा के जन्म के पहले उन लोगों का राजा

'नवपलासर' 'निनेवा' को बर्बाद कर फिर स्वाधीन हुआ।
'नवपालासर' का बेटा 'नेबूकडनसर' बड़ा प्रतापी था; उस ने "सर्सेसियम' की लड़ाई में 'मिसर' के राजा 'नेको' को जीत लिया। उस के बाद वह 'जूडा' प्रदेश पर चढ़ाई कर बड़े बड़े यहूदियों को कैद कर ले गया। इस के पीछे उस ने 'फिनिशिया' और मिसर देशों को भी जय किया; लेकिन 'नेबूकडनसर' के बाद जितने राजा हुए वे प्रतापी न हुए; इस लिये 'वालाथाजार' के समय 'फारस' देश के राजा 'साइरस' ने 'बेविलन' को जय किया।
'बेविलन' नगर बहुत बड़ा था। इस का आकार चौखूंटा था। इस के बीच से 'यूफ्रेटिस' नदी बहती थी; इस के चारो तरफ़ ईंटे की दीवार थी, और बड़ी चौड़ी खांई भी थी। इस नगर का घेरा तीस कोस से कम न था; इस में बहुत से मनोहर बगीचे भी बने थे। ऊंचे टीले पर तरह तरह के वृक्ष लगा कर एक 'क्रीड़ाबन' बना था; वह दुनिया की आश्चर्य चीजों में से एक था। कहते हैं कि 'मिडिया' के राजा की लड़की 'आमूहिया' 'नेबूकडनसर' की प्रिया स्त्री थी। 'नेबूकडनसर' ने उसी की खुशी के लिये वह 'क्रीड़ाबन' बनाया था; इस को लोग 'सेमिरेमिस' का 'अनवलम्बोद्यान' कहते थे। 'बेविलन' में एक 'बिलसदेव' का मन्दिर बड़े बहार का था। वह करीब ३०० फुट के ऊंचा था; और उस की सूरत 'मिसर' के 'पिरा-

मिड. की सी थी। 'बेबिलन' नगर का खंडहर आज तक मुसाफ़िरों को देख पड़ता है। 'यूफ़्रेटिस' के पश्चिम किनारे 'पिरामिड' की तरह एक खंडहर का ढूह देख पड़ता है; कोई कोई कहते हैं कि यही 'बिलसदेव' का मन्दिर था।

'बेबिलन' वालों में बहुतेरे 'सेमिटिक' जाति के थे और वे लोग 'सीरिया' की 'आरामीय' भाषा में बात चीत करते थे; उन में से जो लोग 'कालडीय' कहलाते थे वे जोतिष-विद्या में बड़े निपुण थे, चन्द्र और सूर्य ग्रहण का हाल बतला सकते थे; चान्द्र और सौर बरस के भेद को भी जानते थे; उन्हों ने नक्षत्रों को बारह राशियों में बांटा था; और ग्रहों की चालों का हिसाब भी किया था।

अगले दिनों में जो लोग असल सिद्धान्त जोतिष-विद्या पढ़ते थे, वे लोग फलित जोतिष-विद्या पर भी ध्यान देते थे। सिद्धान्त जोतिष-विद्या जानने से ग्रहों की बहुत सी होनहार बातें जानी जा सकती हैं। उस को साधरण लोग तो यह समझते कि ऐसा ज्ञान दैवी शक्ति बिना नहीं हो सकता; इस लिये उन लोगों ने जोतिषियों से अपने भाग्य का हाल पूछना शुरू किया। जोतिषियों ने यह देखा कि सब लोगों में ऐसा भ्रम रहने से वे हमारे वश में रहेंगे; इस लिये उन्हों ने उन के भ्रम को दूर करने का कोई उपाय न किया वरन ऐसी कोशिस की कि जिस में लोगों का

वह भ्रम और भी बढ़े। इस में कुछ शक नहीं कि पुराने जोतिषियों के ऐसे यत्न से फलित जोतिष उत्पन्न हुआ।

"कालडीय" पंडितों ने फलित जोतिष-विद्या की अनेक शाखें निकालीं और उस की जड़ खूब जमाई। ये लोग "शुक्र" और "वृहस्पति" को शुभ; और "मंगल" और "शनि" को अशुभ ग्रह समझते थे; और "बुध" को कहते थे कि वह आप, न भला न बुरा है; शुभ-ग्रह के साथ रहने से शुभ, और बुरे ग्रह के साथ रहने से ख़राब फल देता है। ऐसी बहुत सी बातें ठहरा कर "कालडीय" लोग होने वाली भलाई बुराई बतलाते थे। उन्हीं लोगों ने पहले पहल समय जानने के लिये पानी की घड़ी बनाई थी। और चीजों को तौलने के लिये बहुत तरह के नाप जोख के "बटखरे" भी बनाये थे। बहुत से लिखने वाले यह ख़याल करते हैं कि "कालडीय" लोग "सेमिटिक" जाति के न थे; ये लोग आर्य्य बंश के थे; और आर्य्य धर्म्म वालों की तरह ये लोग भी पहले मूर्ति नहीं पूजते थे; सिर्फ़ चन्द्र सूर्य आदि ग्रहों को मानते थे। निदान ये लोग मूर्ति बना कर सूर्य को "बिलसदेव" और चन्द्र को "मिलिता" देवी के नामों से पूजने लगे।

सातवां प्रकरण।

फारसियों का हाल।

पहला भाग।

एशिया के पश्चिम हिस्सों में जो ऊंची पहाड़ी ज़मीन देख पड़ती है, वही आर्य्य या इरानी लोगों के रहने की असल जगह है। वह ऊंची पहाड़ी ज़मीन टर्किस्तान के बीच हिस्से से शुरू हो उत्तर दक्षिण तरफ़ फैली हुई है। मिडिया फ़ारस और वाक ये तीन प्रदेश उसी ऊंची पहाड़ी ज़मीन के हिस्से समझे जाते हैं। उन फ़ारस देश में जो आर्य्य लोग रहते थे; उन्हें फ़ारसी कहते थे। पुराने फ़ारस वालों के वंश के लोग आज तक फ़ारस देश में रहते हैं। लेकिन आज कल के फ़ारसी लोग मुसलमान हो गये हैं; और अभी वे लोग कोई ऐसी प्रबल कीर्ति नहीं कर सके। पर एकबाटाना सूसा पर्सिपोलिस आदि पुराने शहरों के जो टूटे फूटे खंडहर रह गये हैं, उन को देखने से साफ़ मालूम होता है कि उन के बनाने वाले लोग किसी समय में बड़े प्रतापी और नामी रहे होंगे।

यह मालूम होता है कि पहले फ़ारस देश आसीरिया राज के अधीन था; बाद इस के जब मिडिया देश के

राजा ने आसोरिया के राज को सत्यानाश किया तब वह देश मिडिया के अधीन हुआ। लेकिन थोड़े दिनों में साइरस नामी एक महात्मा ने इस देश में जन्म लिया और अपनी जन्म-भूमि को स्वाधीन किया; वह सिर्फ़ फ़ारस देश को साध कर न बैठ रहा, बल्कि तुरत दिग्विजय करने को निकला; और बेबिलन मिडिया आरमिनिया और एशियाईटर्की के पश्चिमी हिस्से को जिसे एशियामाइनर कहते हैं, जीत कर, अपने राज में मिला लिया। निदान साइरस तातारी लोगों के साथ लड़ाई में मारा गया। यह बात ५२८ बरस ईसा के जन्म के पहले हुई। साइरस के मरने बाद उस का बेटा कामबाइसिस फ़ारस का राजा हुआ इस ने मिसर देश को जीता और अपने फ़ारस राज में मिला लिया।

कामबाइसिस के बाद पहला दारायूस फ़ारस का राजा हुआ उस ने यूनान पर चढ़ाई की लेकिन उसे जीत न सका। हिन्दुस्तान का कुछ हिस्सा, शायद सारा पंजाब इस के इलाके में था। इसी दारायूस ने फ़ारस देश के राज नियम बनाये थे। उस ने सब राज को बीस सेटरोप अर्थात् हिस्सों में बांटा था; हर एक हिस्सों का प्रधान सेटरोप कहलाता था। और उन को अपने अपने अधिकार में कुल इख़्तियार थो, सिर्फ़ राजा को हर बरस कर देते थे। राजा हर एक सेटरोप से कर वसूल करने के लिये एक

एक दीवान मुक़र्रर करता था। वह दीवान महाराज के गुप्त दूत के समान 'सेटरोप' के पास रहता था; और अपना काम किया करता था। पर सेटरोप और दीवान से देश भरका पूरा काम नहीं हो सकता था इस लिये वे लोग हर गांव, शहर, और ज़मीदारी, में किसी किसी प्रधान मनुष्यों को कुछ अधिकार सपुर्द करके सारे प्रदेश का इन्तिज़ाम करते थे। फ़ारस राज्य के ताबे के सब हिस्से एक दूसरे से इलाक़ा नहीं रखते थे। एक सेटरोप को प्रजा दूसरे सेटरोप की प्रजा के साथ कुछ इलाक़ा नहीं रखती थी। यद्यपि फ़ारस का राज मिसर आदि सब राजों से बहुत बड़ा और प्रबल था; तो भी खूब मज़बूत नहीं था। पहले दारायूस के बाद उस का बेटा जरकसीस फ़ारस के सिंहासन पर बैठा और यूनान पर चढ़ाई की; लेकिन यूनान वालों के वीर बहुत प्रबल थे; इस लिये फ़ारस की सेना छिन्न भिन्न हो कर भाग गई। उसी समय से यूनानी और फ़ारसी लोगों में बड़ी दुश्मनी चली; इस लिये यूनान वाले बार बार फ़ारस के राज पर चढ़ाई करते रहे। निदान मेसिडोनिया का राजा बड़ा सिकन्दर ने यूनान के इलाके की जितनी सेना थी; सब को इकट्ठी कर, फ़ारस पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया। और एशिया में यूरोप वालों की हुकूमत की, पहले पहल नेंव दी। सिकन्दर के मरने पीछे उस का राज कई हिस्सों में

बंट गया। उन में से पूरब प्रदेश में वाकट्रिया नाम राज जो क़ायम हुआ; उस का पहले ही समय से हिन्दुस्तान के साथ बहुत संबध था। यह मालूम होता है कि वाकट्रिया ही के यूनानी राजा लोग, हमारे पुरानों में यवन या काल-यवन आदि नाम से प्रसिद्ध हैं। वाकट्रिया के यूनानी राजाओं में यूक्रेटीडस सब से बड़ा नामी था। वह १८० बरस ईसा के जन्म के पहले हुआ था। इन यवन राजाओं का कोई इतिहास नहीं मिलता; केवल सिक्कों में उन के नाम और काम का कुछ हाल लिखा है। उन्हीं को देखने से उन का थोड़ा बहुत हाल मालूम हुआ है।

दूसरा अध्याय।

पुराने 'फ़ारसियों' का धर्म और भाषा का ठीक हाल सिर्फ़ एक ही ग्रंथ से जाना जाता है; उस ग्रंथ का नाम 'वेसडा' है; यह 'ज़िन्द' भाषा में लिखा हुआ था इस कारण उस ग्रंथ को 'जिंद-वेसडा' कहते हैं। यद्यपि 'ज़िन्द' भाषा संस्कृत से न निकली हो; पर तौभी संस्कृत और ज़िन्द ये दोनों एक ही जड़ से निकली हैं इस में कुछ सन्देह नहीं। और यद्यपि 'वेसडा' के धर्म की रीति वेद को धर्म की रीति की सी नहीं है तौभी इन दोनों धर्मों की तरह एक है इसमें कुछ शंक नहीं।

'वेसडा' में लिखा है कि 'अर्मसद' और 'आहरीमान्' ये दोनों; 'जवैनअकरण' अर्थात् अनादि और अनन्त काल से उत्पन्न हुए हैं। उन दोनों में सदा लड़ाई होती है। अर्मसद से प्रकाश, ज्ञान, ताप, बुद्धि, क्रिया, और गृहस्थी धर्म, ये सब उत्पन्न हुए हैं। आहरीमान से अन्धकार, अज्ञान, शीत, जड़ता, जंगलीपन आदि उत्पन्न हुए हैं। अर्मसद के मुसाहब देवता अमसस्पन्द कहलाते हैं। इन के ताबे दुनिया की सब जगहों में एक एक साधारण देवता, मालिक की तरह रहते हैं। आहरीमान के मुसाहब दैत्य हैं, वे सब सदा अर्मसद के सेवकों का स्थान बिगाड़ने चाहते हैं, इस कारण अर्मसद और आहरीमान में सदा झगड़ा हुआ करता है पर अंत को अर्मसद आहरीमान को जीतेगा; और सुख, ज्ञान, प्रकाश फैलावेगा। सब ग्रहों में प्रकाश है; इस लिये फ़ारसी लोग उनको अर्मसद की मूर्तियां समझ कर पूजा करते थे। आग को भी इसी सबब से वे लोग पूजने लगे थे। फ़ारसी लोग किसी मंदिर में मूर्ति रख कर नहीं पूजते थे, वे सब किसी मैदान में, या पहाड़ के ऊपर, सुबह, या दो पहर, के समय में ज्ञान और प्रकाश देने हारे अर्मसद को मन में ध्यान कर सूर्य देवता की पूजा करते थे।

फ़ारसियों का धर्म कितना पुराना है; यह कोई नहीं जान सकता; परंतु यह मालूम होता है कि उस धर्म

का संहिता बनाने वाला जोरोयासटर या ज़रदस्त एक हज़ार बरस ईसा की जन्म के पहले मिडिया देश में उत्पन्न हुआ था।

आठवां प्रकरण।

ग्रीस या यूनान।

पहला अध्याय।

ग्रीस या यूनान एक प्रायद्वीप है। यह भू-मध्य सागर के उत्तर किनारे पर है; इसके पूरब ओर जो समुद्र की शाख है, उसका नाम 'इजियन' समुद्र है; और पश्चिम तरफ़ जो समुद्र है उसे आइओनियन समुद्र कहते हैं। यूनान पहाड़ी देश है; इसके पहाड़ की कोई कोई चोटियां, इतनी ऊंची हैं कि वे सदा वर्फ़ से ढकी रहती हैं। पहाड़ की तराज ज़मीन बहुत ही उपजाऊ है; इस के सब जगहों की आब हवा बहुत अच्छी है। यूनान के किनारे के आस पास बहुत सी छोटी छोटी समुद्र की शाखें हैं; इससे यह मुल्क तिजारत के लायक है।

पहाड़ और समुद्र की शाखाओं की वजह से यह मुल्क पहले ही समय से कई हिस्सों में बंटा है; इसके दक्खिनी हिस्से को 'पिलापोनिसस' कहते हैं; इसमें सात जुदे जुदे

राज थे, उनके नाम ये थे; कोरिंथ आर्गलिस लाकोनिया मेसिना इलिस आर्केडिया एकेया। और यूनान के बिचले हिस्से में आठ और जुदे जुदे देश थे, उन के नाम ये थे; मिगारिस आर्टिका बिओसिया फोरिसिस लोक्रिस डोरिस इटोलिया आकरनानिया। उत्तर यूनान में थेस्लि इपाइरस मासिडोनिया ये तीन ही देश थे। इन तीनों में से पहले मासिडोनिया यूनान में नहीं गिना जाता था। यूनान महादेश, इस तरह इन देशों में बंटा था; और इन सबों के सिवाय इस के दोनों किनारों पर बहुत से छोटे छोटे टापू भी थे; वे सब पहले समय में इसी के इलाके समझे जाते थे। रोडस साइप्रस साइक्लेडिस सिफालोनिया थिसरा क्रीट कसाँड्रा आदि बहुत मशहूर थे। पुराने यूनानियों ने तिजारत के साथ बहुत दूर दूर के देशों में अपने लोगों को बहुत सी नई बस्तियां भी बसाई थी। उन में एशियामाइनर सिसली इटली का दक्खिनी हिस्सा और मिसर के उत्तर पश्चिम कोने, जो उन लोगों की नई बस्तियां थीं वे बहुत मशहूर थीं।

'यूनान' इस तरह जुदे जुदे हिस्सों में बंटा था, इस कारण इस का इतिहास भी जुदे जुदे हिस्सों में बंटा है। इस के सब जुदे जुदे देशों के रहनेवालों का धर्म, भाषा, और रंग एक था; पर तो भी वे लोग अपने को एक-जाति के नहीं मानते थे; यहां तक कि उन्हों ने अपने देश का

पहले खास एक नाम भी नहीं रक्खा था ; बाद जब उन लोगों का आपस में मेल बढ़ा, तब अपने को 'हेलेनिया' और अपने मुल्क को 'हेलास' कहने लगे। 'रोमी' लोग पहले इस देश को 'ग्रीस' कहते थे ; इस लिये आजकल के यूरोप के लोग भी इसे 'ग्रीस' कहते हैं।

दूसरा अध्याय।

ग्रीस का प्राचीन वर्णन, पुरान की कथा, हरक्यूलिस, थिसियूस, कलचिस, और ट्राय की चढ़ाई।

अठारहसौ बरस ईसा के जन्म के पहले से यूनान का इतिहास मिलता है। पहले नौ सौ बरस का इतिहास बिलकुल झूठ नहीं है, तौ भी उसु में अजीब तरह की कहानियां भरी हैं ; मालूम होता है कि इतिहास का वह हिस्सा पुरान से लेकर लिखा गया है ; यूनानी पुरान में 'यूनान' के प्राचीन लोगों को 'पिलासजी' कहते हैं ; ये लोग जंगली थे ; और पहाड़ों के खोह में रहा करते थे और शिकार से अपना निर्वाह करते थे और पशुओं के चमड़े से अपने तन को ढांकते थे।

कुछ दिनों के बाद 'मिसर' के राज-कुमार' यउरेनस' ने यूनान में आकर 'सभ्यता' की जड़ रोपी, और राजा बना, लेकिन उसे उसके लड़कों ने जो 'टाइटान' कहलाते थे गद्दी से उतार दिया और उन 'टाइटानों' में से सब से जेठा भाई 'साटर्न' राज-गद्दी पर बैठा; और इस डर से कि मेरे लड़के भी मुझे गद्दी से उतार देंगे; वह अपने लड़कों को होते ही मारडालता था। निदान उसको एक लड़का 'जुपिटर' नाम पैदा हुआ। तब उसकी स्त्री जुपिटर को ले कर 'क्रीट' नाम टापू में भाग गई। वहां कुछ दिन बाद जब वह बढ़ा, और बुद्धिमान हुआ तब 'यूनान' में आया और अपने बाप और 'टाइटान' नाम चाचों को लड़ाई में झटजीत लिया और आप सिंहासन पर बैठा। 'जुपिटर' ने सारे राज को आप ही न लिया पर 'नेपचून' और 'प्लूटो' नाम अपने दो भाइओं को भी उस में शरीक किया और बड़ी बुद्धिमानी और बिचार के साथ राज करने लगा।

ये सब पुरान की बातें कहां तक सच हैं हम लोगों को मालूम नहीं; पर 'जुपिटर' 'सटरन' आदि नाम जिन लोगों के हैं; उन को, वहां के लोग देवता की तरह पूजते थे बेशक ये बातें कवियों की बनावटी हैं। उन लोगों नें 'कालपुरुष' का रूप 'साटरन' देवता को ठहराया था; 'काल' जैसे आप पैदा करता और आप ही नाश करता है; उसी तरह वह भी अपने लड़कों को पैदा और नाश करता था इस कारण इन बातों का इतिहास

में अगर कुछ जड़ हो तौभी उस से कुछ विशेष फल नहीं।

'एशिया' की किसी एक जात के 'हेलेनीय' नामी लोग, बहुत पुराने समय में 'यूनान' में आये और 'पिलास' जी लोगों को जीता और उनमें से बहुतेरों को मारडाला; और बहुतेरों को देश से निकाल दिया; और बाकि को अपने साथ मिला लिया। इन 'हेलनिय' लोगों को तीन जमात थी उन तीनों जमातों की असल भाषा एक ही थी; लेकिन छोटे छोटे फ़रकों के कारन उस के तीन जुदे जुदे नाम पड़ गये थे। एक का नाम 'इयोलिय' दूसरी का 'डोरिय' और तीसरी का नाम 'आइयोनिय' था।

'हेलेनीय' लोगों के आने के बहुत दिन पीछे अर्थात् ईसा के जन्म से १८५६ बरस पहले 'इनेकस' नामी एक मनुष्य ने 'फ़िनिशिया' से आकर 'आर्गस्' नगर बसाया। इसके ३०० बरस पीछे, अर्थात् १५५६ बरस ईसा के जन्म के पहिले 'सिक्रप्स' नामी 'मिसर' के राजकुमार ने 'यटिका' में आकर 'एथेंस' शहर आबाद किया। १४९३ बरस ईसा के जन्म के पहले 'कादमस' नामी एक आदमी ने 'फिनिशिया' से आकर बियोसिया प्रदेश में 'थिब्स' शहर को बसाया। सन १५२० बरस ईसा के जन्म के पहले 'सिसिफस' नामी एक मनुष्य ने 'कोरिन्थ' शहर बसाया। उसी समय 'लीलक्स' नामी एक मनुष्य ने 'मिसर' से आकर 'लाकोनिया' में 'स्पार्टा' नगर आबाद कर चला गया।